नई दुनिया की चाह में बढ़ते कदम महिलाओं के

Another world is possible

आजादी के समय से वर्तमान तक महिलाओं ने जो संघर्षपूर्ण यात्रा तय की है वह इस तरीके से नहीं लिखी गयी जिस तरह महिलाओं को दरकार थी। लेकिन संघर्ष पूर्ण यात्रा के दौरान नारी के जीजिविषा ने अपनी आवाज को जो बुलंदी दी वो काबिले तारीफ है और आजादी के बाद से महिलाओं ने अनेक बुलंदियों को छुआ है जहां एक तरफ महिलाओं की बेहतर होती स्थिति को देखकर हर्ष होता है वहीं काला भयावह सच भी देखने को मिलता है मणीपुर व कश्मीर जैसे राज्यों में महिलाओं के साथ बलात्कार, कहीं पर (कश्मीर) तो नियमित रूप से होती बलात्कार की घटना रोंगटे खड़े करने वाली हैं दूसरी तरफ महिला युद्ध में फंसी निर्दोष नागरिक हैं बल्कि व्यक्तित्व बराबरी की लड़ाई भी लड़ रही है। इन्हीं सब समस्याओं को हल करने के लिए महिलाओं के विभिन्न संगठन बने हैं ये संगठन मणिपुर एवं कश्मीर जैसे राज्यों में कार्य कर रहे हैं इसी तरह की समस्याओं को समाप्त करना अभी बाकी है इन्हीं समस्याओं के विरूद्ध आवाज उठाने के लिए 5 जनवरी 2010 इंडियन इंटरनेशनल सेंटर में विभिन्न संगठनों से जुड़ी महिला कार्यकर्ताओं ने इस सेमिनार में भाग लिया। जिसमें डॉ. मालती, रमनिका गुप्ता, रीता कुमारी, पुतुल कुमारी समेत अन्य लोग मौजूद थे यह सेमिनार सैडेड द्वारा आयोजित किया गया। सेमिनार में महिलाओं ने नई दुनिया बनाने की बात कही। जिसमें पुतुल कुमारी का कहना था कि सपने अवश्य देखें, क्योंकि तभी हम नई दुनिया की कल्पना कर सकते हैं सपने ही हमारे लक्ष्य को आकार देते हैं उन्होंने आगे अपने अनुभवों को बताते हुए कहा कि वे 60–70 दश्क का दौर से विभिन्न आंदोलनों से जुड़ी थीं। मुझे उस समय आजादी का मतलब भी नहीं पता था। हर युवा की तरह मेरे मन में भी सवाल उठते थे गुजरात, बौद्धगया आदि जगहों पर आन्दोलन हो रहे थे हम जे.पी के साथ इन आंदोलन से जुड़ें थे हम गांव–गांव जाकर रहते थे उन गांवों का भ्रमण करते थे यह सब अनिवार्य था क्योंकि जे.पी जानते थे कि गांवों से ही मूलभूत बदलाव सम्भव है और भारत गांवों में बसता है। इन सभी अन्दोलनों में महिलाओं ने अविस्मरणीय योगदान दिया। महिलाओं के ही योगदान की बात की जाय तो पुरुष वर्ग के साथ अन्याय होगा। क्योंकि पुरुषों ने भी बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया। बौद्धगया में जो शराब के विरोद में आन्दोलन हुआ वह पुरुषों की भागीदारी के गवाह हैं। इस पूरे सफर को पुतुल ने सफलत्तम माना। कुछ खामियों की बात भी स्वीकार की, लेकिन नई दुनिया की राह को सम्भव बताया।

सेमीनार में दूसरे महिला संगठन से जुड़ी सुधा रेडडी का कहना था कि मैं महिलाओं से संबधित समस्याओं को देखकर काफी चिंतित होती हूं और इसी उम्मीद के साथ कार्य में सलंग्न रहती हूं कि समस्या हल होगी। मैं यहा पर राजनीतिक रूप से न कह कर यह कहना चाहती हूं कि हमें मानवता के बारे में सोचना होगा, हर किसी की सहभागिता के बिना नई दुनिया नहीं बन सकती हमें दिल और दिमाग से काम करना होगा।

सेमीनार में सबसे अधिक अनुभवी रमानिका गुप्ता का कहना था कि हम जिस मानवता के दृष्टिकोण से नई दुनिया की कल्पना की बात करते हैं वहीं यह देखना भी दिलचस्प है कि महिला व पुरुषों का नजरिया मानवता के संबध में अलग–अलग है आदिवासियों की अपनी अलग ही दुनिया है जहां उन्हें प्रोत्साहन देने वाला कोई नहीं है यह वही आदिवासी दुनिया है जहां रजवाडे के शासन से लोकतंत्र चला आ रहा है खासि जाति ने ही पहले दुनिया में लोकतंत्र की स्थापना की थी। जो आज भी मेघालय में वास करती हैं। रमनिका गुप्ता ने एक ऐसे इतिहास के बारे में बताया जो इतिहास के पन्नों में दर्ज न होकर लोगों के सामने आने से रह गया 1774 में झारखण्ड में पहले स्वतंत्रता संग्राम के बारे में बताया। जो आजादी के लिए पहली लड़ाई थी अंग्रेजों के विरूद्ध।

आदिवासियों के बारे में चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि आज हमें जितने भी जंगल दिखाई देते हैं वो आदिवासियों की बदोलत ही मौजूद हैं। जब एक आदिवासी पेड़ काटता या जमीन खोदता है तो पहले उस धरती से क्षमा मांगता है कि ‘‘ हे धरती मां मेरे पास खाने के लिए कुछ नही है मेरा सहारा सिर्फ तुम ही हो इसलिए मुझे क्षमा करना’ वहीं हम पट्टे पर लिखकर जमीन देने की बात करते हैं। हमें आदिवासी महिलाओं की चेतना जगाकर साथ चलना होगा। आज हम चाहे महिलाओं की सफलता के कितने ही पुल बांध ले लेकिन आज भी यही समाज लड़कियों को प्रेम करने से रोकता है। सभी वर्ग की महिलाओं को साथ लेकर बड़े सागर का निमार्ण करना होगा। और नई दुनिया के सपने अवश्य देखने चाहिए, लोहिया जी कहा करते थे कि ‘सपने न देखना मुर्दे के समान है।’

सेमीनार में रति सिंह का भी कहना इसी तरह था कि महिलाओं को साथ चलकर समस्याओं को खत्म करना है। आदिवासी महिलाओं ने राजाजी नेशनलपार्क में बिना सहयोग के सूब आन्दोलन किए, आज भी याद है वह जीत का नशा। वहीं उन्होंने आगे कहा कि अपने आप को बदलकर नई दुनिया बना सकते हैं।

पूरे सेमीनार में पिछड़े और झुग्गी–झोपड़ी इलाकों में शोध के काम में लगी रीता कुमारी ने जो बातें कहीं वह बातें काफी आश्चर्य से भरी व चिन्तित करने वाली थी उन्होंने जब सीलमपुर, दिल्ली में शोध किया तो देखा कि अधिकत्तर पुरूष व महिलाएं कमाने के लिए दिल्ली जैसे शहरों में आए हैं। इन पिछड़े इलाकों में महिलाओं की स्थिति काफी दयनीय हैं। शिक्षा का अभाव है। इन महिलाओं के साथ आए दिन इन्हीं के पतियों द्वारा अत्याचार होते हैं। कई महिलाओं का कहना था कि हम रोजी–रोटी के लिए इतने बड़े–2 शहरों में आते हैं। यहां पर भी उनका पति कब उन्हें छोड़ दे इसका कोई ठिकाना नहीं। ऐसे में महिलाओं के सामने अपने बच्चों को पालने की समस्या आ जाती है। खुद रीता कुमारी का कहना था कि वो इन महिलाओं की समस्याओं को देखती हैं लेकिन यदि वो रात को देर से घर पहुंचे तो खुद उन्हें भी ऐसी ही समस्या से जूझना पड़ता है। आज भी औरत आदमी को ही सब कुछ मानती है। अगर एक वेश्या धन्धा करती है तो कोई ये जानने की कोशिश नहीं करता ये वो ऐसा सब कुछ किसलिए कर रही है? एक महिला समाज से लड़ सकती है लेकिन घर से कैसे लड़े। उसे घर से प्रोत्साहन मिलना जरूरी है। दिल्ली जैसी राजधानी में कई मणिपुरी देखने को मिल जाते हैं जो कि एक प्रारंभिक समस्या है। सेमीनार में जिस तरह से महिला संगठन/सामाजिक संगठन से जुड़ी महिलाओं ने विभिन्न आवाजों को मिला कर एक आवाज बनाई है समय–समय पर इसके परिणाम भी निकले हैं। दिल्ली जैसे शहरों में ही महिलाओं की ऐसी दयनीय स्थिति है तो ऐसे में अन्य राज्यों के बारे में तो कहना ही क्या।

पाकिस्तान के संदर्भ में यही बात अक्सर कही जाती है कि वहां पर शासन की बागडोर सेना के हाथों में है ऐसे ही हालात भारत के बोर्डर में भी है कश्मीर और उत्तरी पूर्वी में सेना का सर्वस्व है। लोगों को कानून के नाम पर खामोश किया जाता है। जवानों के द्वारा मानवाधिकारों का हनन हो रहा है जो जारी है। लाखों की तादात में तैनात जवान आए दिन लोगों को मौत के घाट उतार देते हैं। कश्मीर में तो लोगों को बंधक बनाया जा रहा है जिनमें युवक वर्ग की तादात ज्यादा है सरकार को इस तरीके के कानून बनाने से पहले ये समझना चाहिए कानून केवल लोगों को गूंगे बनाने के लिए नहीं होते, जिसके लिए आप कानून बनाते हैं उनकी भागीदारी भी होना आवश्यक है। मणिपुर 22 लाख की आबादी वाला राज्य है जहां 6 लाख के लगभग लोग बेरोजगार हैं। मणिपुर में ''आर्म्ड फोर्सेज स्पेशल 1958' को हटाने की बात हो रही है। पिछले दस सालों से ''इराम चानू शर्मिला'' अनशन पर हैं। आर्म्ड फोर्सेज स्पेशल 1958 एक ऐसा कानून है जो सिक्किम को छोड़कर उत्तरी पूर्वी राज्यों में लागू है। जिससे तहत सेना संज्ञान अपराध करने के इरादा रखने वाले को बिना

साक्ष्य के गोली से उड़ा सकती है। और यहां पर इस वजह से औसतन एक व्यक्ति रोज मरता है इसी काले कानून को हटाने की मांग शर्मिला कर रही है।

शर्मिला को आयरन लेडी ऑफ मणिपुर भी कहा जाता है 10 सालों से मानवाधिकारों के लिए लड़ रही है और अब जाकर शर्मिला की व्यंगों पर ध्यान तो दिया जा रहा है लेकिन नतीजा अभी भी अधर में लटका है। शर्मिला जब से अनशन में बैठी है बिना खाए हैं। अब उनकी स्थिति बहुत खराब उनको जिंदा रखने के लिए तरल पदार्थ दिए जाते हैं। मौत और शर्मिला के बीच एक पाइप का फासला है। ''आर्म्ड फोर्सेज स्पेशल 1958 को हटाने की मांग को लेकर उनके संगठन काम कर रहे हैं। और सरकार पर राजनीतिक दबाव बनाने की पूरी कोशिश कर रहे हैं। दीप्ती प्रिया– जो मणिपुर में जाकर इससे सम्बन्धित कार्य कर चुकी हैं। लेखिका भी हैं इन्होंने शर्मिला पर किताब लिखी है उनका कहना है कि हम ये मांग करते हैं कि ये कानून हटाया जाए और इसका हल भी निकले, और अगर हम इस कानून को जहां हटाने की बात करते हैं वहीं ऐसी मांग अन्य राज्यों में भी मांग उठने लगेगी इसलिए सोच सम्भलकर कदम उठाने होंगे।

इन सब को देखकर भारत में लोकतन्त्र की नाकामी को साफ देखा जा सकता है जो जारी है। एक सवाल ये भी उठता है कि क्या सेना को अनुशासित कर सकते है या नही? क्योंकि कश्मीर और उ.पूर्वी राज्यों में ऐसी खबरे आती हैं कि अफसरों के निर्देश पर महिलाओं के साथ बलात्कार करवाया जाता है। कश्मीर में तो स्थिति और भयावह है वहां पर महिलाओं के साथ नियिमत तौर पर यौन शोषण होता है। कशमीर में बच्चे अनाथ हो गये हैं। शिक्षा की हालत खस्ता है कब कौन कहां मौत को प्यारा हो जाए ये कोई नही जानता। मौत का खोफ इतना हो गया है कि लोग अब अपने साए से भी डरने लगे हैं। ये सब मानवाधिकार संबधी बहुत चिन्ता जनक है महिलाओं के साथ यौन शोषण होते हैं लेकिन कश्मीर में पारम्परिक रूप से मुसिलम समाज रहता है जिससे इस तरह की बातों को आगे नहीं लाया जाता। और कश्मीर जैसे राज्यों में हर गांव में नागरिक प्रशासन नहीं है जिससे रोकने के लिए कोई कानून नहीं होता है।

मणिपुर राज्यों में जब दीप्ती प्रिया गयी तो वहां लोग काफी खुश थे। दीप्ती को उनके लिए इंडियन शब्द काफी चौंकाने वाला लगा। वह लोग अपने आपको भारत का हिस्सा नहीं मानते। कुछ ऐसी ही बात कशमीर में भी सुनने को मिली –एक युवक का कहना था– कि भारतीय कशमीर में घट

रही घटनाओं से अनभिज्ञ हैं। वो हमारे दुख को नहीं जानते हैं वहां के युवा व युवतियां तो अपना भविष्य बनाने में जुटे रहते हैं।